

16.03, 2024jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

**कानपुर वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**

## कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में पांच दिवसीय प्रगतिशील गन्ना किसान संगोष्ठी के समापन पर निदेशक द्वारा किसानों को सर्टिफिकेट देकर किया गया सम्मानित



**एनएसआई कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी किसानों को यहां प्राप्त सार्वजनिक जानकारी को अपने गांव, ब्लाक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करना चाहिये: निदेशक, प्रो.डी. स्वाईन**

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में बिहार के पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण एवं गोपालगंज जिलों से आये लगभग 35 प्रगतिशील गन्ना किसानों के समूह का दिनांक-11.3.2024 से दिनांक-15.3.2024 तक चलने वाले पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आज समापन हुआ। किसानों को प्रशिक्षण सत्र में जानकारी देते हुये संस्थान के सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने कम लागत में अधिकतम गन्ना उत्पादन हेतु नवीनतम उन्नतिशील तकनीक, गन्ने की फसल में संतुलित उर्वरकों का महत्व एवं प्रबंधन पर किसानों से जानकारी दी। डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने बिहार की नवीनतम गन्ने की प्रजातियों में विभिन्न रोगों एवं कीटों का समुचित प्रबंधन, बासी गन्ने से किसान एवं चीनी मिलों के नुकसान, गन्ने की खेती में प्रयोग में आने वाले नवीनतम कृषि उपकरणों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। श्री अशोक कुमार मार, सहायक आचार्य (शर्करा प्रौद्योगिकी) ने गन्ने की नई प्रजातियों से ज्यादा गुड़ प्राप्त करने

की नवीनतम तकनीक के बारे में प्रगतिशील गन्ना किसानों को बताया। >पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुये संस्थान के निदेशक, प्रो.डी. स्वाईन ने कहा कि कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी किसानों को यहां प्राप्त सार्वजनिक जानकारी को अपने गांव, ब्लाक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करना चाहिये, तभी कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध होगी। जब उन्नत तकनीकों का प्रसार होगा तो उपज में गुणात्मक वृद्धि होगी और मेहनत और लागत में कमी आएगी। बचा हुआ धन और श्रम दोनों का उपयोग अन्य विकासपरक कार्यों में हो सकेगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना कार्यक्रम के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण डिजिटल समूह के प्रतिनिधि श्री विनय कुमार, ईश विकास, मोतीलाल, बिहार ने निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर को संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु साधुवाद दिया और कार्यक्रम में प्रगतिशील किसानों को नई-नई तकनीकों और जानकारीयों से अवगत कवाने हेतु आभार प्रकट किया। समापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में जैव रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो. (डॉ.) सीमा परीहार, आचार्य जैव रसायन ने कहा कि जब भी इस प्रकार के शैक्षणिक वा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता महसूस हो या कोई जानकारी वांछित हो, वे (किसान) संस्थान से बिना किसी संकोच के संपर्क कर सकते हैं। आपकी समस्याओं का समाधान कर हमें खुशी होगी। जान की सरिता का प्रवाह कभी रुकना नहीं चाहिये, ये विस्तर प्रवाहमान रहे। (अखिलेश कुमार पाण्डेय)

1 2

# किसान अब अन्नदाता के साथ साथ ऊर्जादाता भी हो गए-प्रो डी स्वाईन

मुरादाबाद जनपद के 22 किसानों को दी गई गन्ना उत्पादन की नयी तकनीकी जानकारी

अमन यात्रा व्यूरो

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर के निदेशक प्रोफेसर डी स्वाईन ने आज यहाँ कहा कि अब किसान केवल अन्नदाता ही नहीं रह गया है वरन् ऊर्जादाता भी कहलाने का हकदार हो गया है क्योंकि गन्ने की खेती से अब विद्युत उत्पादन भी सम्भव हो गया है। प्रोफेसर स्वाईन राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में जनपद मुरादाबाद से आये 22 गन्ना किसानों को गन्ना उत्पादन की आधुनिकतम तकनीक एवम् उन्नत प्रजाति के गन्ने की जानकारी दे रहे थे। इस संबंध में मुख्य अधिकृत अखिलेश कुमार पांडेय ने जानकारी देते हुए बताया कि

डॉ. अशोक कुमार, सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने गन्ने की उपजाऊ प्रजातियों के साथ मिट्टी की जांच तथा उसके अनुरूप उर्वरकों के प्रयोग संबंधी सांगठित जानकारी दी। डॉ. अशोक कुमार ने किसानों को कई



उन्नत तकनीकों के बारे में भी बताया जिनका उपयोग कर किसान कम मेहनत और कम समय में ज्यादा कार्य कर सकते हैं।

किसानों के दिल को संबोधित करते हुये संस्थान के डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने कम लागत में एवं

अपेक्षाकृत कम क्षेत्रफल एवं कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली गन्ने की विभिन्न प्रजातियों से किसानों को अवगत करवाया। डॉ. बाबर ने गन्ना उत्पादन के दौरान आने वाली विभिन्न समस्याओं, गन्ने को नुकसान पहुंचाने वाले विभिन्न कीटों के उपचार आदि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।



जैव रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो. (डॉ.) सीमा परीहार ने कहा कि अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग प्रकृति और खेत दोनों के लिये घातक हो सकता है। यह सिंचाई के दौरान पानी में मिलकर जमीन में जा रहा है जिससे भूजल बहुत अधिक

दूषित हो रहा है और उससे तमाम बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। अब समय आ गया है कि किसानों को परंपरागत गोबर खाद और बायो कंपोस्ट की ओर ध्यान देना चाहिये। इसको अपनाने से हम मानव स्वास्थ्य और वातावरण दोनों की रक्षा कर सकते हैं।

# 22 किसानों के दल ने किया राष्ट्रीय सरकार संस्थान का भ्रमण

पकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। राष्ट्रीय संघ संस्थान कानपुर द्वारा गठित किसान संस्थान, पुरादाबाद के नेतृत्व में 22 किसानों का एक दल संस्थान के भ्रमण हेतु राष्ट्रीय संघ संस्थान कानपुर पहुंचा। दल का मुख्य उद्देश्य गठित उत्पादन को आधुनिक उन्नत प्रणालि के गने को जानकारी करवा था।

इस अवसर पर किसान दल को स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रो.डी. स्वर्दान ने किसानों के आगमन पर हार्दिक प्रतिक्रिया और कहा कि किसानों को अवगत है। ये अवगत अपने क्षेत्रों में गने को फसल उत्पादन चीनी मिलों को संपर्क करते हैं। गने को पेटाई के उपरांत बचे अवशेष (छोटे) से बिजली का उत्पादन किया जाने लाभा है। इस प्रकार अवशेष अब ऊर्जादाता भी हो गये हैं।

डॉ.अशोक कुमार, स्थापक आचार्य (कृषि रसायन) ने गने को उत्पादन प्रणालियों के साथ मिट्टी की जांच तथा उसके अनुकूल ऊर्जाओं के प्रयोग संबंधी सारगर्भित जानकारी दी। डॉ.अशोक कुमार



ने किसानों को कई उन्नत तकनीकों के बारे में भी बताया जिसका उपयोग कर किसान कम मेहनत और कम समय में ज्यादा काम कर सकते हैं।

किसानों के दल को संबोधित करते हुए संस्थान के डॉ. लोकेश बाबर, कृषि वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने कम लागत में एवं अधिकतम कम क्षेत्रफल एवं कम पानी से अधिक उत्पादन देने वाली गने को विभिन्न प्रणालियों से किसानों को अवगत कराया। डॉ. बाबर ने गठित उत्पादन के दौरान आने वाली विभिन्न समस्याओं, गने को नुकसान पहुंचाने वाली विभिन्न बीमारियों के उपचार आदि के बारे में

भी विस्तार से जानकारी दी।

जैव रसायन अनुभव प्रमुख, प्रो.(डॉ.) सीमा परीता ने कहा कि अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग प्रकृति और खेत दोनों के लिये घातक हो सकता है। यह मिट्टाई के दौरान पानी में मिलकर जमीन में जा रहा है जिससे भूजल बहुत अधिक दूषित हो रहा है और इससे हमारा पीमाईस उपज हो रही है। अब समय आ गया है कि किसानों को परंपरागत गोबर खाद और बजो कंपोस्ट को और ध्यान देना चाहिए। इसको अपनाने से हम मानव स्वास्थ्य और वातावरण दोनों को रक्षा कर सकते हैं।

नई दिल्ली)

## दिल्ली/आसपास

# एनएसएआई कानपुर में बिहार के किसानों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

निष्ठा पेंसट। सा कृषि मोहन बिहारी

कानपुर। उ.प्र। राष्ट्रीय संघ संस्थान, कानपुर में बिहार के पृथ्वी चंद्रशेखर, पश्चिमी चंपारण एवं मोहालसंजिगीरी से अष्टमि लगभग 35 प्रशिक्षण गन्ना किसानों के समूह का दिनांक-11.3.2024 से दिनांक-15.3.2024 तक चलने वाले पांच दिवसीय एनएसएआई सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का उन्नत समापन हुआ।

किसानों को प्रशिक्षण सत्र में जानकारी देते हुए संस्थान के स्थापक आचार्य (कृषि रसायन) ने कार्यक्रम में अधिकतम गन्ना उत्पादन हेतु नवीनतम उन्नत प्रणालि तकनीक, गने को फसल में सहूलित उर्वरकों का महत्व एवं फसल पर विम्वार से जानकारी दी।

डॉ. लोकेश बाबर, कृषि वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने बिहार की नवीनतम गन्ना की प्रणालियों में विभिन्न गने एवं बीमों का संतुलित प्रबंधन, बासी गने से किसानों एवं पौधों मिलने के नुकसान, गने की



खेती में प्रयोग में आने वाले नवीनतम कृषि उपकरणों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. अशोक कुमार वर्मा, स्थापक आचार्य (शर्करा प्रोसेसिंग) ने गने की गठित प्रणालियों के ज्यादा गुण प्राप्त करने की नवीनतम तकनीक के बारे में प्रागतिशील गन्ना किसानों को बताया। पांच दिवसीय एनएसएआई सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रो. डी. स्वर्दान ने कहा कि कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी

किसानों को यहाँ प्राप्त सारगर्भित जानकारी को अपने गाँव, ब्लाक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करवा चाहिए, तभी कार्यक्रम की सार्थकता सिद्ध होगी। उन्नत तकनीकों का प्रसार होना तो तभी में गुणात्मक वृद्धि होगी और मेहनत और लागत में बचो आयेगी। बच्चा हुआ धन और धन देने में आ उपयोग अन्य विचारसमरक क्षमों में हो सकेगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना कार्यक्रम के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय एनएसएआई सह

प्रशिक्षण विजिट समूह के प्रतिनिधि की निष्ठा कुमर, ईश विकास, चोरीहारी, बिहार ने निदेशक, राष्ट्रीय संघ संस्थान, कानपुर का संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु साधुवाद दिया और कार्यक्रम में प्रभाविता किसानों को नई-नई तकनीकों और जानकारीयों से अवगत करवाने हेतु-आभार व्यक्त किया।

समापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में जैव रसायन अनुभव प्रमुख, प्रो.(डॉ.) सीमा परीता, आचार्य जैव रसायन ने कहा कि जब भी इस प्रकार के शैक्षणिक या प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता महसूस हो वा कोई जानकारी चाहिए हो, वे (किसान) संस्थान से बिना किसी खर्चों के संपर्क कर सकते हैं। आपकी परामर्शों का प्रफुल्लित कर हमें खुशी होगी। ज्ञान को सँरक्षित का प्रवाह कभी रुकना नहीं चाहिए, वे निरंतर प्रबलमान रहे। इस अवसर पर मोहिता प्रभाती अखिलेश कुमार पाण्डेय भी मौजूद रहे।

## पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

पाकज अवस्थी, सच लौ अहमियात

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में बिहार के पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण एवं वैशाली जिलों से अपने लगभग 35 प्रतिनिधित्व ग्राहक किसानों के समूह का दिनांक-11.3.2024 से दिनांक-15.3.2024 तक चलने वाले पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम समाप्त हुआ किसानों को प्रतिशिक्षण सत्र में जानकारी देने हुए संस्थान के सहायक आचार्य (कृषि रसायन) ने कम लगभग में अधिकांश गन्ना उत्पादन हेतु नवीनतम उन्नततकनीक, नये की फसल में संतुलित उर्वरकों का महत्व एवं प्रबंधन पर विस्तार से जानकारी दी।

डॉ. लोकेश बाबर, कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी (कृषि रसायन) ने बिहार की नवीनतम गन्ने की प्रजातियों में विभिन्न रंगी एवं कोटी का समुचित प्रबंधन, बासी गन्ने से किसान एवं चीनी मिलों के नुकसान, नये की खेती में प्रयोग में आने वाले नवीनतम कृषि उपकरणों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

अशोक कुमार एवं, सहायक अध्यापक (शर्करा प्रयोगशाला) ने नये की नई प्रजातियों से न्यूनतम गुण प्राप्त करने की नवीनतम तकनीक के बारे में प्रतिनिधित्व



गन्ना किसानों को बताया। पांच दिवसीय एक्सपोजर सह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्थान के निदेशक, प्रो. डी. स्वाईन ने कहा कि कार्यक्रम में भागीदारी करने वाले सभी किसानों को यहां प्राप्त सारगर्भित जानकारी को अपने गांव, ब्लॉक व जिले के अन्य किसानों के साथ साझा करना चाहिये, तभी कार्यक्रम को सार्थकता सिद्ध होगी। जब उन्नत तकनीकों का प्रसार होगा तब उपज में गुणात्मक वृद्धि होगी और मेहनत और लागत में कमी आएगी। बचा हुआ मन और श्रम दोनों का उपयोग अन्य विकासपरक कार्यों में हो सकेगा इस अवसर पर मुख्यमंत्री गन्ना विकास योजना कार्यक्रम के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय एक्सपोजर सह

प्रशिक्षण विंडो चला के प्रतिनिधि श्री विनय कुमार, ईक विकास, मोतीहारी, बिहार ने निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर को संस्थान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने हेतु साभुखट दिया और कार्यक्रम में प्रतिनिधित्व किसानों को नई-नई तकनीकों और जानकारीयों से अवगत करवाने हेतु आभार प्रकट किया। समापन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में वैब रसायन अनुभाग प्रमुख, प्रो. (ई.) सोमा परीत, आचार्य वैब रसायन ने कहा कि जब भी इस प्रकार के शैक्षणिक या प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता महसूस हो या कोई जानकारी चाहिए हो, वे (किसान) संस्थान से बिना किसी संकोच के संपर्क कर सकते हैं।

## किसानों की दी गन्ने की नई प्रजातियों की जानकारीयां

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 19 मार्च। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में गन्ना किसान संस्थान मुरादाबाद के नेतृत्व में 22 किसानों का एक दल संस्थान के भ्रमण के लिए पहुंचा। इनका मुख्य उद्देश्य गन्ना उत्पादन की आधुनिकतम तकनीकों एवं आधुनिक उन्नत प्रजातियों के गन्ने की जानकारी करना था। संस्थान के निदेशक प्रो. डी. स्वाईन ने किसानों के आगमन पर हर्ष व्यक्त किया और कहा कि किसान तो अन्नदाता हैं। ये अन्नदाता अपने खेतों में गन्ने की फसल उगाकर चीनी मिलों को सप्लाई करते हैं। गन्ने की पैदाई के उपरांत बचे अवशेष खोई से बिजली का उत्पादन किया जाने लगा है। इस प्रकार अन्नदाता अब ऊर्जादाता भी हो गये हैं। सहायक आचार्य डॉ. अशोक कुमार ने गन्ने की उन्नत प्रजातियों के साथ मिट्टी की जांच तथा उसके अनुरूप उर्वरकों के प्रयोग संबंधी सारगर्भित जानकारी दी। डॉ. अशोक कुमार ने किसानों को कई उन्नत तकनीकों के बारे में भी बताया जिनका उपयोग कर किसान कम मेहनत और कम समय में ज्यादा कार्य कर सकते हैं। किसानों के दल को संबोधित करते हुए संस्थान के डॉ. लोकेश बाबर (कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी) ने कम लागत में एवं अपेक्षाकृत कम क्षेत्रफल एवं कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली गन्ने की



किसानों को जानकारी देते वैज्ञानिक।

विभिन्न प्रजातियों से किसानों को अवगत करवाया। डॉ. बाबर ने गन्ना उत्पादन के दौरान आने वाली विभिन्न समस्याओं गन्ने की नुकसान पहुंचाने वाले विभिन्न कीटों के उपचार आदि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। वैब रसायन अनुभाग प्रमुख प्रो. सोमा परीत ने कहा कि अधिधुंध रसायनिक उर्वरकों का प्रयोग प्रकृति और खेत दोनों के लिये घातक हो सकता है। यह सिंचाई के दौरान पानी में मिलकर जमीन में जा रहा है जिससे भूजल बहुत अधिक दूषित हो रहा है और उससे तमाम बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। अब समय आ गया है कि किसानों को परंपरागत गोबर खाद और बायो कंपोस्ट की ओर ध्यान देना चाहिये। इसको अपनाने से हम मानव स्वास्थ्य और वातावरण दोनों को रखा कर सकते हैं।

## Digital News

- एन एस आई में किसानों ने गन्ना किसानों ने एक्सपोजर सह प्रशिक्षण में उत्पादन के सीखे गुरु।
- राष्ट्रीय शर्करा संस्था के निदेशक डॉ. स्वेन जी का एक और अहम कदम।
- गन्ना किसान संस्थान मुरादाबाद के नेतृत्व में 22 किसानों का दल पहुंचा कानपुर राष्ट्रीय शर्करा स
- अन्नदाता अब ऊर्जादाता भी बन रहे हैं: प्रो. डी. स्वाईन